

Shri Indrajit Gupta: Are we to understand that ever since collaboration in the field of oil with the Soviet Union began several years ago, up till now no Indian technician has been sent abroad for training and this is the first time that it is going to be done?

Shri Humayun Kabir: My hon. friend is wrong when he thinks that this is the first time....

Shri Indrajit Gupta: I am asking you. What do you mean by saying I am wrong?

Shri Humayun Kabir: For Barauni 88 people have already been trained. For the Gujarat refinery 10 people have been trained.

Shri Raghunath Singh: May I know how the trainees are going to be selected to be sent to Russia?

Shri Humayun Kabir: They will be taken preferably from the personnel of ONGS or of the Refineries.

Bomb Explosions in Goa

*773. **Shri D. C. Sharma:** Will the Minister of Home Affairs be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 66 on the 18th November, 1964 and state:

(a) the progress made in the investigations undertaken by the Central Intelligence Bureau in regard to the series of bomb explosions roundabout 20th June, 1964, in Goa; and

(b) the stage at which the matter stands at present?

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Hathi): (a) and (b). The investigation in this case was not conducted by the Central Intelligence Bureau but by the Goa Police in close consultation with the Intelligence Bureau. The investigation has been completed and the case has since been filed before the 1st class Magistrate at Margao. As the case is now *sub judice* it is not advisable to go into any further details at present.

Shri D. C. Sharma: May I know whether the CIB collaborated with the Goa Police as a matter of normal routine duty or it was asked to do so because of the lack of adequacy of police personnel there?

Shri Hathi: It is not exactly a question of lack of adequacy of police personnel. If any State Government asks for assistance, we generally give it. Moreover, Goa being a Union Territory, we had to give that assistance.

Shri D. C. Sharma: May I know if this outrage—of course, I do not want to go into the merits of the outrage.....

Shri Hathi: Thank you.

Shri D. C. Sharma: May I know whether for the trial of this outrage, a very bad outrage, some special magistrate has been appointed or a normal functioning magistrate in that territory has been appointed?

Shri Hathi: We have not appointed any special magistrate.

श्री रघुनाथ सिंह: अब तक जो एन्क्वायरी हुई है। क्या उस से यह कुछ ठीक से मालूम हुआ है कि जो बम एकस्प्लोजन हुए थे, वे बम देसी थे या इम्पोर्टेड थे ?

अध्यक्ष महोदय : एन्क्वायरी करने पर यह पता चलेगा ।

राष्ट्रीय प्रयोगशालायें
+

*774. { श्री मधु लिमये :
श्री किशन पटनायक :

क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने विशेषज्ञ तथा स्वतन्त्र अभिकरणों के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की योजनाओं को वित्तीय मूल्यांकन करने का कोई प्रयत्न किया है;

(ख) क्या सरकार ने (एक) विशुद्ध अनुसंधान (दो) उस अनुसंधान का औद्योगिक-कार्यों में प्रयोग के सम्बन्ध में इन प्रयोगशालाओं के अनुसन्धान कार्यों का कोई मूल्यांकन किया है; और

(ग) क्या इन प्रयोगशालाओं के काम के फलस्वरूप प्रत्यक्ष रूप में कुछ वस्तुएं सस्ती हुई हैं या कुछ वस्तुओं के स्थान की पूर्ति करने के लिये नई वस्तुयें प्राप्त हुई हैं या विदेशी मुद्रा की बचत हुई है या प्रतिरक्षा सम्बन्धी शक्ति में वृद्धि हुई है ?

शिक्षा मंत्री (श्री मु० क० चागला) :

(क) से (ग), विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

(क) राष्ट्रीय प्रयोगशाला के अनुसंधान कार्यक्रम से मिलाई गई प्रत्येक प्रायोजना-योजना की वित्तीय जिम्मेदारियों की पूरी जांच तथा निर्धारण पहले प्रयोगशाला की प्रबंध परिषद् द्वारा और बाद में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् के शासी निकाय द्वारा जिस ने बजट मंजूर किया, और अन्त में परिषद् के शासी निकाय द्वारा इसकी जांच तथा निर्धारण किया जा चुका है । इन सब निकायों में बाहर के विशेषज्ञ भी शामिल हैं ।

(ख) प्रत्येक राष्ट्रीय प्रयोगशाला के अनुसन्धान कार्यक्रम की जांच तथा समीक्षा उस की प्रबंध परिषद् द्वारा वर्ष में कम से कम दो बार की जाती है । वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान बोर्ड द्वारा विशेष कार्यक्रमों, जैसे विशाल मार्गदर्शक संयंत्र आदि का परीक्षण भी किया जाता है । इसके साथ वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद् के अध्यक्ष (प्रधान मंत्री) द्वारा परिषद् तथा इस की प्रयोगशालाओं के कार्य का मूल्यांकन तथा समीक्षा करने के लिए एक आवधिक जांच समिति नियुक्त की जाती है । डा० ए० आर० मुदलियार की अध्यक्षता में तृतीय जांच समिति ने अभी हाल में अपना काम पूरा किया है और

एक रिपोर्ट प्रस्तुत की है जो संसद के पुस्तकालय में उपलब्ध है ।

(ग) राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं ने देशी कच्चे माल का उपयोग, देशी तकनीकी कार्यकुशलता, आयात होने वाले सामान के लिए देशी अनुकल्पों तथा नए उत्पादनों के सम्बन्ध में 450 से अधिक कार्य किए हैं । यह कहना कठिन है कि किसी वस्तु के दाम कम हुए हैं या नहीं लेकिन इन से लगभग 22 करोड़ की विदेश मुद्रा की बचत हुई है । राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं द्वारा रक्षा संबंधी 87 समस्याओं को भी सफलतापूर्वक सुलझाया गया है ।

श्री मधु लिमये : मेरे सवाल के जवाब का जो दूसरा हिस्सा है, उस की ओर मैं मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूँ । जिस मुदलियार समिति का उल्लेख उन्होंने किया है, मेरा ख्याल है कि उसने करीब करं ब तीस सिफारिशों की हैं । मैं यह जानना चाहता हूँ कि उन सिफारिशों में से किन किन पर सरकार ने अमल किया है और वह खास कर खोज कार्यक्रम के बारे में 8 वीं सिफारिश, जन-संख्या नियंत्रण के सम्बन्धी खोज के बारे में 29 वीं सिफारिश और खोज कार्य मूल्यांकन के सम्बन्धी 30 वीं सिफारिश के बारे में बता दें ।

Shri M. C. Chagla: The Mudaliar Committee's Report was made only a short time ago. I called a special meeting of the governing body of the CSIR to consider that. The governing body has considered it and we are doing our best to implement as many of its recommendations as we have accepted and which, we think, should be carried out.

श्री मधु लिमये : जवाब के तीसरे हिस्से में बताया गया है कि प्रयोगशालाओं ने खोज कर के 450 बड़े कार्य किये हैं और उस से करीब करीब 22 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हो गई है । मैं यह जानना चाहता हूँ कि इन में से कौन से बड़े कार्य ऐसे हैं—

वह चार पांच कार्य बतायें, जिस से विदेशी मुद्रा की बचत ज्यादा हुई है और इन राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं पर उन की प्रस्थापना के बाद आज तक कुल कितनी विदेशी मुद्रा खर्च हो गई है ।

Shri M. C. Chagla: I have placed in the Library of the House a brochure which I have got specially published by the CSIR so that Members of Parliament should know what is happening in our laboratories and, if my hon. friend would look at that, he will find a full report as to the important researches made by our laboratories, to what extent they have been exploited and what is the saving in foreign exchange. It is not possible for me to say off-hand what are the important things that they have done; but, there is a brochure which contains all the information which my hon. friend seeks and if he wants any more information, I will be very happy to give it.

श्री किशन पटनायक : सवाल के इस पहलू पर जोर देते हुए कि वैज्ञानिक कार्यों के लिए भी साज-सज्जा पर बहुत खर्च होता है मैं यह पूछना चाहता हूँ कि पिछले साल जब मैं ने यह इल्जाम लगाया था कि सी० एस० आई० आर० के डायरेक्टर-जैनेरल ने अपने कमरे की सजावट के लिए एक लाख रुपये का खर्च किया था, तो मंत्री महोदय ने उस को निराधार बताया था, लेकिन बाद में वह चीज प्रमाणित हो गई है, तो उस के प्रमाणित होने के बाद इस फिजूलखर्ची के खिलाफ क्या कार्यवाही मंत्री महोदय ने की है ।

Shri M. C. Chagla: The question does not really arise from this. We are talking of the laboratories.

श्री किशन पटनायक : यह एराइज करता है ।

Shri M. C. Chagla: I thought, I had answered that question when it was put to me as to what was the money

spent. That was before my time. We are now talking of the work done in the laboratories, the research, the saving of foreign exchange and the commercial exploitation of the research. With respect to my hon. friend, this question does not really arise out of this.

श्री मधु लिमये: अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । मंत्री महोदय ने कहा है कि श्री किशन पटनायक ने जो बात पूछी है उस का इस प्रश्न से सम्बन्ध नहीं है । मैं अपने प्रश्न के पहले हिस्से की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ, जिसमें लिखा गया है कि यह जो प्रयोगशालाओं का सारा काम चल रहा है, क्या उसके आर्थिक पहलू के बारे में सरकार ने सोचा है । एक लाख रुपये की फिजूलखर्ची का जो सवाल उठाया गया है, क्या यह आर्थिक पहलू से सम्बन्धित नहीं है ? मंत्री महोदय कैसे कह सकते हैं कि यह इस प्रश्न से नहीं निकलता है ?

अध्यक्ष महोदय : इस वक्त एक एक इंडिविडुअल केस तो नहीं लिया जा सकता है ।

Shri Ranga: This is an important question.

श्री मधु लिमये : माननीय सदस्य ने एक व्यापक प्रश्न पूछा है, जिसके लिए उन्होंने उदाहरण दिया है ।

Shri Ranga: Rs. 1 lakh are involved in it; it is not a small matter.

Shri Tridib Kumar Chaudhuri: I have gone through the brochure to which the hon. Education Minister has just now referred. May I know whether the savings is actual saving secured by the country as a whole or by the Government or by commercial industries or is it potential saving?

Shri M. C. Chagla: No, Sir; Rs. 22 crores is the money actually saved in foreign exchange.

Shri Shree Narayan Das: In view of the fact that the Reviewing Committee of the C.S.I.R. has suggested that the fundamental research should mostly be carried on by Universities and these laboratories should devote much of their time for applied research, may I know whether any action has been taken in that direction?

Shri M. C. Chagla: That has been our policy. The laboratories set up under the C.S.I.R. are intended for applied research so that industrialisation should go ahead and fundamental research is primarily meant for the Universities.

Shri Hari Vishnu Kamath: Is it not a fact that because of the relatively unsatisfactory scale of emoluments and service conditions in the national laboratories, several young and competent research scientists are attracted to the private sector and, if so, what ways and means or incentives are being devised by the Government to attract them to these national laboratories?

Shri M. C. Chagla: We have recently revised the scales of our directors. I am happy to tell the House that—I preside over every selection committee—I find cases where youngmen come and say, "Although we are getting more money in the industry, we want to come to the laboratories because we want to do research work."

श्री किशन पटनायक : मैं एक स्पष्टीकरण चाहता हूँ ।

अध्यक्ष महोदय : इतनी देर के बाद स्पष्टीकरण नहीं हो सकता है ।

Shrimati Savitri Nigam: Though very useful and good work is being done in these laboratories, I want to make one complaint that the results of various researches are not passed on to the industry and others concerned which could be utilised properly in time.

Shri M. C. Chagla: Most of them are passed on. But I am taking steps to see that there is a closer collaboration between industry and our laboratories. It is not correct to say that we do not pass on the results of research because some of them have been commercialised and several of them are under the process of being commercialised.

Text Books in Regional Languages

***775. Shri Vishwa Nath Pandey:** Will the Minister of Education be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Union Government have advised the State Governments to bring out textbooks and dictionaries in regional languages for use in higher studies; and

(b) if so, the reaction of the State Governments thereto?

The Deputy Minister in the Ministry of Education (Shri Bhakt Darshan): (a) and (b). A statement is laid on the Table of the Lok Sabha.

STATEMENT

(a) and (b). As a preparatory step towards the introduction of Hindi and regional languages as medium of instruction for higher education, the Ministry of Education has formulated a scheme for preparation, translation and publication of standard works of University level in Hindi and regional languages. It is being implemented from the year 1960. In that year, the Union Education Minister brought this scheme to the notice of the State Education Ministers and Vice-chancellors of Universities and sought their co-operation in implementing it through the Universities and the Academic Bodies of the State Governments. So far only the States of Bihar, Rajasthan, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, West Bengal, Madras, Gujarat, Punjab, Mysore and Maharashtra have agreed to participate in the scheme.